International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

Original Article

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर: एक शोधकर्ता

प्रा. डॉ. संगीता विष्णु भोसले

वसुंधरा कला महाविद्यालय,

जुळे सोलापुर, सोलापुर (महाराष्ट्र)

Manuscript ID:
IJAAR-130436
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 4
March – April 2026
Pp. 235 - 240

Submitted: 15 Mar. 2026
Revised: 08 Apr. 2026
Accepted: 09 Apr. 2026
Published: 10 Apr. 2026

Corresponding Author:
प्रा. डॉ. संगीता विष्णु भोसले

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.22079375

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.22079375

Creative Commons

OPEN ACCESS

प्रस्तावना:

शोध केवल तथ्यों को एकत्रित करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सत्य की खोज, स्थापित मान्यताओं की आलोचनात्मक समीक्षा तथा समस्याओं के मूल कारणों को समझकर उनके समाधान की दिशा निर्धारित करने वाली एक वैज्ञानिक एवं सतत प्रक्रिया है। किसी भी समाज की प्रगति के लिए शोध अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि शोध के माध्यम से समाज में विद्यमान समस्याओं की वास्तविक प्रकृति सामने आती है और उनके समाधान के लिए नए विचार एवं विकल्प विकसित होते हैं। शोध समाज को केवल वर्तमान को समझने में सहायता नहीं करता, बल्कि भविष्य के निर्माण की दिशा भी प्रदान करता है।

मानव जीवन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसलिए सामाजिक समस्याओं का अध्ययन भी बहुआयामी होना आवश्यक है। किसी समस्या के केवल बाहरी स्वरूप को देखकर उसके समाधान तक नहीं पहुँचा जा सकता। उसके ऐतिहासिक विकास, सामाजिक कारणों, आर्थिक आधार, राजनीतिक प्रभाव तथा मानवीय परिणामों का अध्ययन आवश्यक होता है। यही वैज्ञानिक शोध की विशेषता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
प्रा. डॉ. संगीता विष्णु भोसले (2026) डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर: एक शोधकर्ता. International Journal of Advance and Applied Research, 13(4), 235 - 240. https://doi.org/10.5281/zenodo.22079375

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी का संपूर्ण जीवन इसी शोध-दृष्टि का उदाहरण है। उन्होंने समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, जातिभेद, सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, धार्मिक रूढ़ियों, राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था जैसे प्रश्नों का अध्ययन केवल भावनात्मक दृष्टि से नहीं किया, बल्कि उनके ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों की खोज की। उन्होंने स्थापित धारणाओं को बिना परीक्षण स्वीकार नहीं किया। उपलब्ध प्रमाणों,

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

ऐतिहासिक स्रोतों और तार्किक विश्लेषण के आधार पर उन्होंने अनेक प्रश्नों पर अपने स्वतंत्र निष्कर्ष प्रस्तुत किए।

डॉ. अम्बेडकर जी का व्यक्तित्व केवल एक समाज सुधारक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ या संविधान निर्माता के रूप में सीमित नहीं किया जा सकता। वे एक बहुविषयक एवं मौलिक शोधकर्ता भी थे। उनका अध्ययन क्षेत्र अर्थशास्त्र से लेकर इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति, धर्म, कानून और संविधान तक विस्तृत था। उनके शोध का अंतिम उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि ज्ञान को मानव-मुक्ति, सामाजिक न्याय, समानता और आत्मसम्मान की स्थापना के लिए उपयोग करना था।

इस दृष्टि से डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी ने जिस समस्या का अध्ययन किया, उसकी जड़ों तक पहुँचने का प्रयास किया और उसके बाद समाधान की दिशा भी प्रस्तुत की। यही कारण है कि उनके चिंतन में शोध और सामाजिक परिवर्तन का गहरा संबंध दिखाई देता है।

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी की शोध-दृष्टि:

डॉ. अम्बेडकर जी की शोध-दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण आधार था—तर्क, प्रमाण, स्वतंत्र चिंतन और सत्य की खोज। वे किसी भी सामाजिक या ऐतिहासिक मान्यता को केवल इसलिए स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे कि वह लंबे समय से प्रचलित है। उनकी दृष्टि में किसी भी परंपरा, सामाजिक व्यवस्था अथवा धार्मिक मान्यता का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि उसका मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। यदि कोई व्यवस्था मनुष्य की स्वतंत्रता, समानता और गरिमा को नष्ट करती है, तो उसकी आलोचनात्मक समीक्षा आवश्यक है। उनकी शोध-दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ-तर्कप्रधान दृष्टिकोण,प्रमाण एवं तथ्य पर आधारित अध्ययन,ऐतिहासिक दृष्टि,आलोचनात्मक चिंतन,स्वतंत्र एवं निर्भीक विचार,तुलनात्मक अध्ययन,बहुविषयक दृष्टिकोण,सामाजिक उपयोगिता,मानव कल्याण की प्रतिबद्धता है। इस प्रकार उनके लिए शोध केवल बौद्धिक अभ्यास नहीं था, बल्कि समाज को दिशा देने का माध्यम था।

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के शोध का उद्देश्य:

डॉ. अम्बेडकर जी के शोध का उद्देश्य अत्यंत व्यापक था। उनके शोध के केंद्र में मनुष्य था। वे ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना चाहते थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान, स्वतंत्रता, समान अवसर और न्याय प्राप्त हो।

- **समानता की स्थापना:**

समानता उनके सामाजिक चिंतन का केंद्रीय तत्व थी। उन्होंने जाति, अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव के कारण उत्पन्न असमानता का गंभीर अध्ययन किया। उनका मानना था कि केवल कानून बनाकर समानता स्थापित नहीं की जा सकती। सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन भी आवश्यक है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर जी ने सामाजिक व्यवस्था की उन संरचनाओं का अध्ययन किया जिनके कारण असमानता पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रही है। उनके शोध में समानता केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं थी। इसमें सामाजिक सम्मान, आर्थिक अवसर, शिक्षा, स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा भी सम्मिलित थी।

- **सामाजिक न्याय की स्थापना:**

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

डॉ. अम्बेडकर जी ने सामाजिक न्याय को आधुनिक लोकतांत्रिक समाज की आवश्यकता माना है। उन्होंने उन सामाजिक व्यवस्थाओं की आलोचना की जिनमें जन्म के आधार पर मनुष्य की स्थिति निर्धारित होती थी। उनका शोध यह प्रश्न उठाता है कि यदि मनुष्य जन्म से समान है, तो समाज में जन्म के आधार पर असमानता क्यों है? यही प्रश्न उनके सामाजिक शोध को एक व्यापक मानवीय आयाम प्रदान करता है।

- **समस्याओं के मूल कारणों की खोज:**

डॉ. अम्बेडकर जी केवल समस्या का वर्णन नहीं करते थे। वे यह जानने का प्रयास करते थे कि समस्या उत्पन्न क्यों हुई और वह लंबे समय तक बनी कैसे रही। उदाहरण के लिए, जाति-व्यवस्था के संदर्भ में उन्होंने केवल जातीय भेदभाव की आलोचना नहीं की, बल्कि उसकी संरचना, सामाजिक आधार और उसके पुनरुत्पादन की प्रक्रिया पर विचार किया। यह उनके शोधकर्ता व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण विशेषता है।

डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर जी की शोध-पद्धति:

डॉ. अम्बेडकर जी की शोध-पद्धति को समझना उनके शोधकर्ता व्यक्तित्व को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

- **ऐतिहासिक दृष्टिकोण:**

डॉ. अम्बेडकर जी सामाजिक समस्याओं को वर्तमान की घटना मानकर नहीं छोड़ा । वे ऐतिहासिक विकास को समझने का प्रयास करते थे। किसी सामाजिक संस्था का वर्तमान स्वरूप किस प्रकार विकसित हुआ? उसमें समय के साथ क्या परिवर्तन आए? और उस परिवर्तन का समाज के विभिन्न वर्गों पर क्या प्रभाव पड़ा? इन प्रश्नों पर वे गंभीरता से विचार करते थे। इसी कारण उनके ऐतिहासिक लेखन में सामाजिक संरचना का विश्लेषण दिखाई देता है।

- **प्रमाण आधारित अध्ययन:**

डॉ. अम्बेडकर जी के शोध में प्रमाणों का विशेष महत्व था। वे अपनी बात को केवल व्यक्तिगत अनुभव या भावनात्मक प्रतिक्रिया के आधार पर स्थापित करने के बजाय उपलब्ध स्रोतों और तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास करते थे। उनके शोध में ग्रंथों, ऐतिहासिक घटनाओं, सरकारी दस्तावेजों, आर्थिक आँकड़ों और राजनीतिक परिस्थितियों का उपयोग दिखाई देता है।

- **आलोचनात्मक दृष्टि:**

डॉ. अम्बेडकर जी किसी भी स्थापित विचार को अंतिम सत्य नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में किसी सिद्धांत या व्यवस्था का मूल्यांकन उसके प्रमाण, तर्क और सामाजिक परिणामों के आधार पर किया जाना चाहिए। इसी आलोचनात्मक दृष्टि के कारण उन्होंने जाति, वर्ण, अस्पृश्यता और धार्मिक-सामाजिक व्यवस्थाओं पर मौलिक प्रश्न उठाए है।

- **तुलनात्मक दृष्टिकोण:**

डॉ. अम्बेडकर का जी अध्ययन केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं था। उन्होंने विभिन्न देशों की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाओं का भी अध्ययन किया। इस तुलनात्मक दृष्टि ने उन्हें यह समझने में सहायता दी कि किसी सामाजिक व्यवस्था को व्यापक मानवीय और लोकतांत्रिक संदर्भ में किस प्रकार देखा जा सकता है।

- **बहुविषयी दृष्टिकोण:**

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

डॉ. अम्बेडकर जी के शोध की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक उनका बहुविषयी दृष्टिकोण था। उनके अध्ययन में इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति, कानून,धर्म, दर्शन का परस्पर संबंध दिखाई देता है। इसी कारण उनके शोध को किसी एक विषय की सीमाओं में बाँधना कठिन है।

जाति-व्यवस्था पर डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर जी का शोध:

डॉ. अम्बेडकर जी के शोध का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र 'भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था का प्रश्न' था। उन्होंने जाति को केवल सामाजिक पहचान के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे सामाजिक संबंधों, अधिकारों, अवसरों और मानवीय गरिमा से जोड़कर समझा। उन्होंने यह प्रश्न उठाया कि ऐसी व्यवस्था जिसमें मनुष्य का सामाजिक स्थान जन्म से निर्धारित हो, वह समानता और लोकतंत्र के सिद्धांतों के साथ किस प्रकार संगत हो सकती है।

- **जाति का सामाजिक प्रभाव:**

जाति-व्यवस्था के कारण समाज में विभिन्न समूहों के बीच सामाजिक दूरी, असमानता और भेदभाव उत्पन्न हुआ। डॉ. अम्बेडकर जी ने इसके परिणामों का गंभीर अध्ययन किया। उनका चिंतन यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक विभाजन केवल व्यक्तिगत संबंधों को प्रभावित नहीं करता, बल्कि राष्ट्र के सामूहिक विकास को भी प्रभावित कर सकता है।

धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं का आलोचनात्मक अध्ययन:

डॉ. अम्बेडकर जी ने धार्मिक ग्रंथों और सामाजिक परंपराओं का अध्ययन भी आलोचनात्मक दृष्टि से किया। उनका उद्देश्य केवल धार्मिक आलोचना करना नहीं था, बल्कि यह समझना था कि धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं का समाज की संरचना और मनुष्य की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से उन्होंने उन मान्यताओं की समीक्षा की जो सामाजिक असमानता को वैधता प्रदान करती थीं। मनुस्मृति तथा अन्य सामाजिक-धार्मिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में उनके विचार इसी व्यापक सामाजिक न्याय की कसौटी से जुड़े हुए थे। उनकी दृष्टि में किसी भी ग्रंथ या परंपरा का मूल्यांकन इस प्रश्न से होना चाहिए कि वह मनुष्य की स्वतंत्रता और समानता के पक्ष में है या नहीं।

'शूद्र पूर्वी कोण होते?': इतिहास की पुनर्व्याख्या:

डॉ. अम्बेडकर जी ने शूद्रों की उत्पत्ति और उनकी सामाजिक स्थिति को समझने के लिए ऐतिहासिक स्रोतों का अध्ययन किया। उनका प्रयास प्रचलित धारणाओं को दोहराना नहीं था, बल्कि यह जानना था कि शूद्रों की सामाजिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से किस प्रकार विकसित हुई। यह कृति उनके इतिहास-अध्ययन की विशिष्टता को सामने लाती है। वे इतिहास को केवल राजाओं और युद्धों का विवरण नहीं मानते थे, बल्कि सामाजिक समूहों की स्थिति और उनके अधिकारों के विकास को समझने का माध्यम भी मानते थे।

अस्पृश्यता के प्रश्न पर शोध:

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

अस्पृश्यता भारतीय समाज की सबसे गंभीर सामाजिक समस्याओं में से एक थी। डॉ. अम्बेडकर जी ने इसके कारणों और ऐतिहासिक विकास को समझने का प्रयास किया। उनके लिए अस्पृश्यता केवल सामाजिक व्यवहार की समस्या नहीं थी। यह व्यक्ति की मानव-मर्यादा, सामाजिक अधिकारों और नागरिक अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न था। इसलिए अस्पृश्यता के विरुद्ध उनका संघर्ष शोध, सामाजिक आंदोलन और राजनीतिक अधिकारों—तीनों स्तरों पर दिखाई देता है।

अर्थतज्ञ डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर:

डॉ. अम्बेडकर जी का शोध केवल सामाजिक विषयों तक सीमित नहीं था। अर्थशास्त्र उनके अध्ययन का महत्वपूर्ण क्षेत्र था। उन्होंने मुद्रा, वित्तीय व्यवस्था, प्रांतीय वित्त और आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया। उनकी आर्थिक चिंतनधारा यह बताती है कि किसी समाज में सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए आर्थिक संरचना को समझना भी आवश्यक है। सामाजिक असमानता और आर्थिक असमानता एक-दूसरे से जुड़ी हो सकती हैं। इसलिए उनके चिंतन में सामाजिक न्याय के साथ आर्थिक प्रश्न भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह उनकी बहुविषयक शोध-दृष्टि का प्रमाण है।

शोध और सामाजिक परिवर्तन:

डॉ. अम्बेडकर जी के शोध की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनका शोध समाज से जुड़ा हुआ था। उनके लिए ज्ञान का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था। ज्ञान का उपयोग सामाजिक परिवर्तन के लिए होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम माना। अध्ययन और ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो सकता है और सामाजिक अन्याय का प्रतिरोध कर सकता है। इस प्रकार उनके चिंतन में शिक्षा, जागृति, आत्मसम्मान, अधिकार-बोध, सामाजिक परिवर्तन का संबंध दिखाई देता है।

निर्भीक शोधकर्ता:

एक सच्चा शोधकर्ता प्रचलित धारणाओं से प्रश्न पूछने का साहस रखता है। डॉ. अम्बेडकर जी का व्यक्तित्व इस दृष्टि से अत्यंत प्रेरणादायक है। उन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर ऐसे प्रश्न उठाए जो उस समय सामाजिक रूप से असुविधाजनक माने जा सकते थे। उन्होंने अपने विचारों को लोकप्रियता के आधार पर नहीं, बल्कि तर्क और प्रमाण के आधार पर प्रस्तुत किया। उनकी निर्भीकता का अर्थ किसी व्यक्ति या समुदाय के प्रति विरोध नहीं था। उनकी मूल चिंता सामाजिक अन्याय की पहचान और उसके समाधान से जुड़ी थी। इसलिए उनके शोधकर्ता व्यक्तित्व में बौद्धिक स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिबद्धता दोनों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर जी के शोध-दृष्टि की प्रासंगिकता:

आज शोध के क्षेत्र में अनेक नई चुनौतियाँ सामने हैं। सूचना की अत्यधिक उपलब्धता के कारण सही और गलत जानकारी में अंतर करना कठिन हो गया है। ऐसे समय में डॉ.अम्बेडकर जी की तर्कसंगत, आलोचनात्मक और प्रमाणाधारित शोध-दृष्टि विशेष रूप से प्रासंगिक दिखाई देती

है। डॉ. अम्बेडकर जी केवल इतिहास के शोधकर्ता नहीं हैं, बल्कि आज के शोधार्थियों के लिए भी प्रेरणा के स्रोत हैं।

निष्कर्ष:

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे समाज सुधारक, अर्थशास्त्री,विधिज्ञ, राजनीतिज्ञ, चिंतक, संविधान निर्माता और मानवाधिकारों के समर्थक होने के साथ-साथ एक गंभीर एवं बहुविषयक शोधकर्ता भी थे। उनकी शोध-दृष्टि की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने सामाजिक समस्याओं को सतही स्तर पर नहीं देखा। उन्होंने उनके ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक आधारों को समझने का प्रयास किया। उन्होंने स्थापित मान्यताओं की आलोचनात्मक समीक्षा की और तर्क तथा प्रमाण के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके शोध का अंतिम उद्देश्य मानव जीवन का कल्याण था। समानता, स्वतंत्रता, बंधुता, सामाजिक न्याय और वैज्ञानिकता उनके चिंतन के प्रमुख आधार रहे है। इसलिए उनके शोध को केवल अकादमिक अध्ययन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। उनके शोध में ज्ञान और सामाजिक परिवर्तन का जीवंत संबंध दिखाई देता है।

डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी की शोध-दृष्टि हमें यह संदेश देती है कि सच्चा शोध वही है जो सत्य की खोज करे, प्रश्न पूछने का साहस रखे, प्रमाणों की कसौटी पर विचारों को परखे और अंततः मानव कल्याण की दिशा में योगदान दे। इस अर्थ में डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी केवल एक महान विद्वान नहीं, बल्कि सत्य, तर्क, प्रमाण, स्वतंत्र चिंतन और सामाजिक न्याय पर आधारित शोध-परंपरा के प्रेरणास्रोत हैं। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि शोध तब अधिक सार्थक बनता है जब वह समाज की पीड़ा को समझे, उसके मूल कारणों की खोज करे और परिवर्तन की दिशा में मार्ग प्रशस्त करे।

संदर्भ ग्रंथसूची:

1. आंबेडकर बी. आर., *जाति-व्यवस्थेचे निर्मूलन*, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र साधने प्रकाशन समिति, महाराष्ट्र शासन, मुंबई, प्रथम संस्करण, 2015
2. आंबेडकर बी. आर., *पाकिस्तान अर्थात भारताची फाळणी*, प्रबुद्ध भारत प्रकाशन, नागपुर, 2016
3. आंबेडकर बाबासाहेब , 'शूद्र पूर्वी कोण होते? समता प्रकाशन, नागपुर,आक्टो. 2018
4. मून वसंत (सं.), डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे बहिष्कृत भारत आणि मूकनायक, शिक्षण विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई, नोव्हें 1990